तीखी मिर्च

VOLUME 3 ISSUE 20 APRIL 2018

# TEEKHI MIRCH

INDIA'S FIRST NATIONAL MONTHLY BILINGUAL CARTOON MAGAZINE ₹ 25

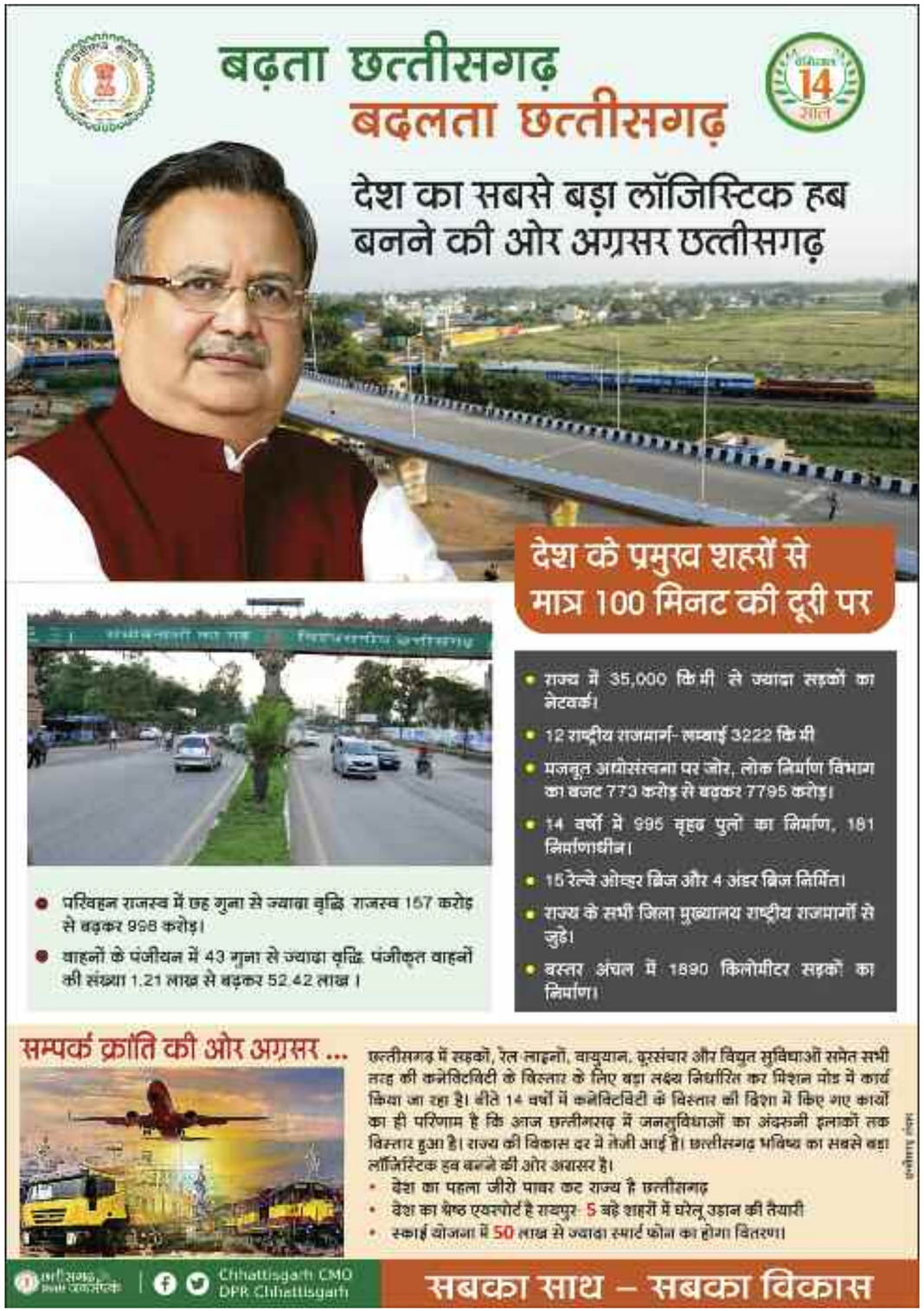




PUBLISHER & EDITOR-IN-CHIEF
**Arti Jain**

**ADVISORY BOARD**
A N Mishra
Ashok Chakradhar
Laxmi Shankar Bajpai
Abhay Kumar Dubey
Vijay Trivedi
Tehseen Munawer
Narendra Kumar Verma

**CARTOONISTS ON BOARD**
E P Unny, The Indian Express
Rajendra Dhodapkar, Dainik Hindustan
Surendra, The Hindu
Irfan Khan,
Subhani, Daccan Chronicle
R Prasad, Outlook
Chandrashekhar Hada, Dainik Bhaskar
Abhishek Tiwari, Patrika Group
Hariom Tiwari, Dainik Bhaskar
Sandeep Joshi, Tribune
Kirtish Bhatt,BBC Hindi
Sajith Kumar,Outlook
Rajesh Dubey, cartoon leela, Jabalpur
Pawan, Dainik Hindustan, Patna
Mansoor Naqvi,DB Post

**DESIGN & PRODUCTION**
Anita Singh
Reena Sharma

**CREATIVE DIRECTOR**
Apurv Jain

**MARKETING**
Pramod Jain

**LEGAL ADVISORS**
Ashwani Kumar Dubey
(Advocate-on-Record, Supreme Court of India)
Dinesh Rai Dwivedi

**CORRESPONDENCE ADDRESS**
208 Sahyog Apartment, Mayur Vihar-1, New Delhi-110091
Editor, Owner, Printer & Publisher: Arti
Published from 208 Sahyog Apartment, Mayur Vihar-1, New Delhi-110091.
Printed at Char Dishayen, G39, Sector 3, Noida (U.P)
**www.teekheemirch.com**
**contact.teekhimirch@gmail.com**

Contact-9810287419

*Cover cartoon by Irfan*
The courts at Delhi shall have exclusive jurisdiction in the event of any dispute arising due to the content published in this magazine.

# Content

Cartoon Feature.....06
Cartoon Express.....08
Vyangya.....36
Global Voice.....38

Vyangya.....42
Cartoonist Corner.....46
Gol Gappe.....49
Youngistan.....50

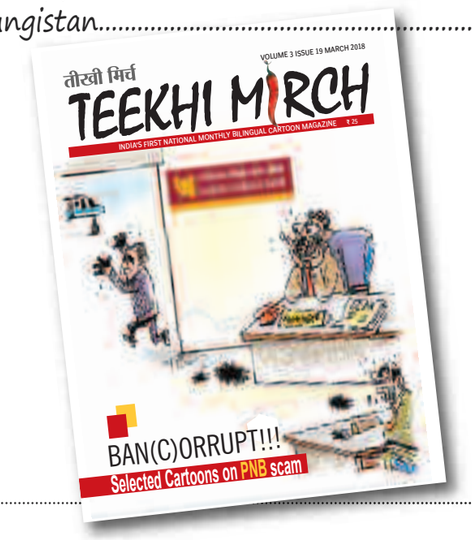

## इंतजार

'तीखी मिर्च' कब आयेगी ? मेरे परिवार में हर छोटे से लेकर मेरी 72 वर्षीय सास भी यही पूछती हैं। हर अंक के बाद अगले अंक का इंतजार।

एक ऐसी पत्रिका जो परिवार के साथ मस्ती-मस्ती में पढ़ ली जाती है। एक सुझाव-इसमें यदि बच्चों का लिये और पन्ने बढ़ा दें तो मेहरबानी होगी।

सरोज सिन्हा
नई दिल्ली

## मार्गदर्शक भी,मनोरंजक भी

हाल ही में आगरा में अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ आपकी कार्टून पत्रिका 'तीखी मिर्च' पर निगाह पड़ी। बड़ी हैरत हुई कि एक पत्रिका ,जो केवल कार्टून और व्यंग्य के लिए ही प्रकाशित होती है। मन में पढ़ने के लिए कुलबुलाहट हुई। परिणामस्वरूप पहले पन्ने से अंतिम पन्ने से तक पढ़ता चला गया। रोचक विषय सामग्री के साथ ही रोचक कार्टूनों का चयन वाकई काबिले तारीफ है। कुल मिलाकर ऐसी पत्रिका लोगों का मार्गदर्शन के साथ -साथ उनका मनोरंजन भी करती है।

रमेश जैन
चंडीगढ़

इस अंक के लिए पाठकों की प्रतिक्रियाएं और सुझाव आमंत्रित हैं।
हमारा पता हैं :
**208, Sahyog Apartment, Mayur Vihar-1, New Delhi-110091**
आप ई-मेल भी कर सकते हैं :
**contact.teekhimirch@gmail.com**

## चलो वोट लूटें !!

जैसे-जैसे 2019 के लोकसभा चुनावों का वक्त पास आता जा रहा है देश में दंगे फैलाने की कट्टरपंथियों की साजिश कामयाब होती जा रही है। पश्चिम बंगाल और बिहार के कुछ हिस्सों में ये आग भड़क चुकी है। इसके पहले उत्तर-प्रदेश में भी छब्बीस जनवरी के आसपास ऐसी ही साजिश रची गई थी जिसके चलते कुछ मासूमों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था साफ दिखाई देने लगा है कि एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत लोगों को दंगों की विभीषिका की ओर धकेला जा रहा है। सोशल मीडिया पर हर तीसरी-चौथी पोस्ट सांप्रदायिक जहर से भरी होती है जिनमें तरह-तरह के मनगढ़ंत किस्सों को इतिहास बता कर पेश किया जाता है। जिस योजनाबद्ध तरीके से जनता के दिलो-दिमाग में ये जंक-फूड परोसा जा रहा है उसने असर दिखाना शुरू कर दिया है । दिनों दिन बढ़ती मंहगाई और देश की गिरती अर्थव्यवस्था ने लोगों को बदहाली के किन हालात में ला कर खड़ा कर दिया है,ये अब उन्हें दिखाई नहीं देता। आये दिन हजारों करोड़ रुपयों के घोटाले उजागर हो रहे हैं। देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे बैंकों के खजाने लुटते जा रहे हैं पर उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। सरकारी तंत्र फेल होने की कगार पर खड़ा है - चुनाव की तारीखें लीक हो जाती हैं,गोपनीय कागज दुश्मनों के हाथ लग जाते हैं,परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक हो जाते हैं जिसकी वजह से लाखों युवाओं का भविष्य अधर में लटक जाता है,पर जनता इन सब से आँखें मूंदे हिन्दू-मुस्लिम जाल में उलझी हुई है। नेताओं के लिए इससे अधिक सुविधाजनक स्थिति कुछ हो ही नहीं सकती है। अब न तो उन्हें जनता को कोई विकास कार्ड दिखाना होगा,न अपनी उपलब्धियों का बखान करने की जहमत उठानी होगी। क्योंकि अगर ऐसा करना पड़ जाता तो शायद उनके पास बताने को कुछ नहीं होता। इसलिए अच्छा है -सिर्फ ये बताइये कि हिन्दू धर्म खतरे में है और झोली भरकर वोट ले जाइए ,अगले पांच सालों तक निरंकुश शासन करने के लिए।
जय श्री राम !!

Arti

TEEKHI MIRCH

The views expressed here are solely those of the author and/or cartoonist in his private capacity and do not in any way represent the views of Teekhi Mirch.-Editor

एक अप्रैल को आपसे वोट मांगने को किसने कहा था?
घोषणापत्र
वोट दो!

आज कुछ भी कहो मानते ही नहीं रहे- कह रहे हैं 'अप्रैल फूल' बना रहे हो!...

तुमने तो घर से चलते वक्त कहा था कि आज मैं कोई शॉपिंग नहीं करूंगी.'
COFFEE
Rest
SNOW WHI
SHOWROOM
अप्रैल फूल बनाया!

SALE
पहले अप्रैल फूल साल में एक दिन ही बनाया जाता था!

# अप्रैल के फूल!!


अप्रैल फूल! प्लास्टिक के हैं!!

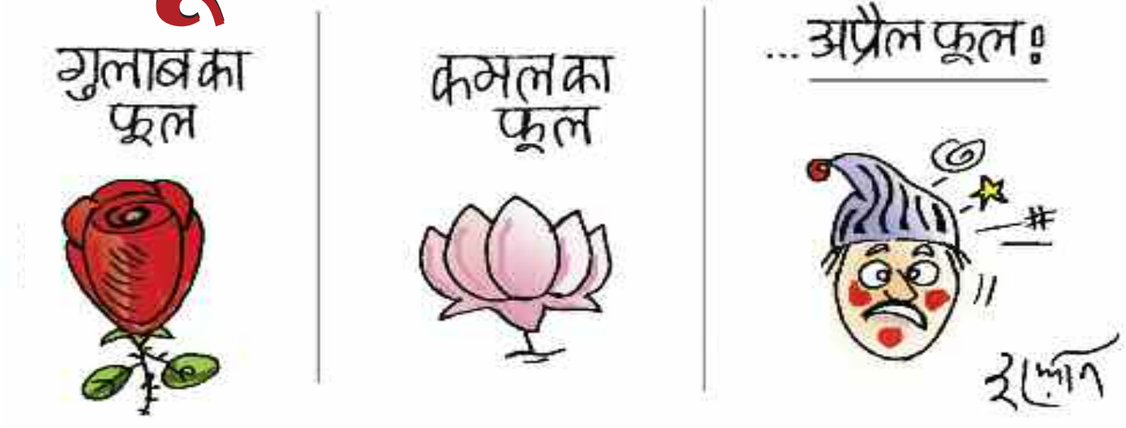


गुलाब का फूल
कमल का फूल
...अप्रैल फूल!

Courtesy : Satyagrah

# cartoon express

## क्षमा(वाणी) !!!

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने जब दिल्ली की सत्ता संभाली थी तभी साफ शब्दों में बता दिया था कि वो यहाँ राजनीति की परिभाषा बदलने आये हैं । पिछले करीब चार सालों में ये बात उनके कामों से कई बार जाहिर भी हुई आजादी के बाद से जिस तरह की राजनीतिकी आदत हिंदुस्तान की जनता को है ,उससे बहुत अलग केजरीवाल ने ऐसी कई बातें कीं जिसने दिल्ली की जनता को हैरानी और विरोधियों को परेशानी में डाल दिया। कई बार विपक्ष के उकसाने पर जनता के विरोध का सामना भी केजरीवाल को करना पड़ा। लेकिन लगता है कि अब धीरे-धीरे जनता को केजरीवाल की बातें समझ में आने लगी हैं । इसीलिए जब इस बार बेकार के अदालती झमेलों में समय और पैसा गंवाने की जगह केजरीवाल ने अपने विरोधियों से माफी मांगकर अपने कोर्ट केसों को निबटाना शुरू किया तो कॉंग्रेस और भाजपा के खूब खिल्ली उड़ाने के बावजूद दिल्ली की जनता ने विपक्ष का साथ नहीं दिया।

Courtesy : DB Post

Courtesy : Social Media

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : TOI

Courtesy : Social Media

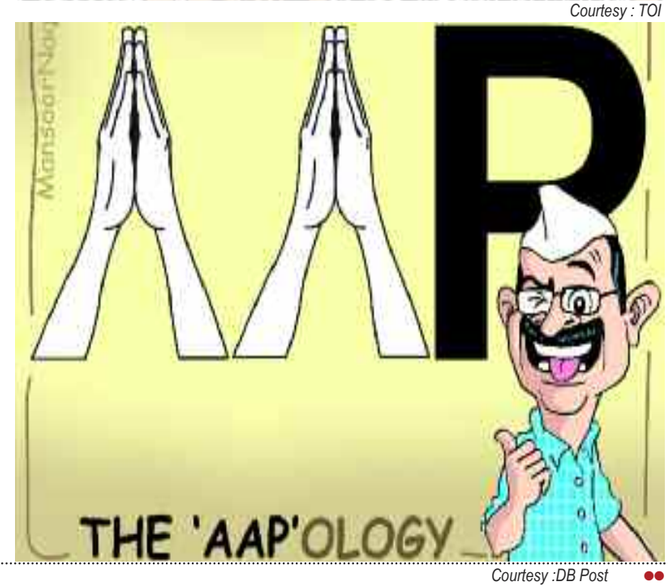


Courtesy :DB Post

Courtesy : DB Post

Courtesy : BBC,Hindi

... अपने नेता के इस कदम से आहत लोगों का आलम तो यह है कि मानो मुख्यमंत्री का "माफ़ी दरबार" ही लगवा के छोड़ेंगे।

Courtesy :Shekhargurera.com

Courtesy : BBC,Hindi

## सूरज पूर्व में भी डूबता है !!!

आजादी के बाद से देश के उत्तर -पूर्वी राज्यों में अधिकतर कॉंग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी का परचम निर्बाध तौर पर लहराता रहा है। लेकिन इस बार यहाँ भी मोदी -फेक्टर ने अपना जादुई करिश्मा दिखला ही दिया। पूरा उत्तर-पूर्व भाजपा के भगवा रंग में रंगा हुआ नजर आ रहा है। पहली बार इन राज्यों में कमल खिलता देख भाजपा उत्साह से भरी हुई है। उसे उम्मीद हो चली है कि 2019 में आने वाले लोकसभा चुनावों के लिए यह एक शुभ संकेत है।

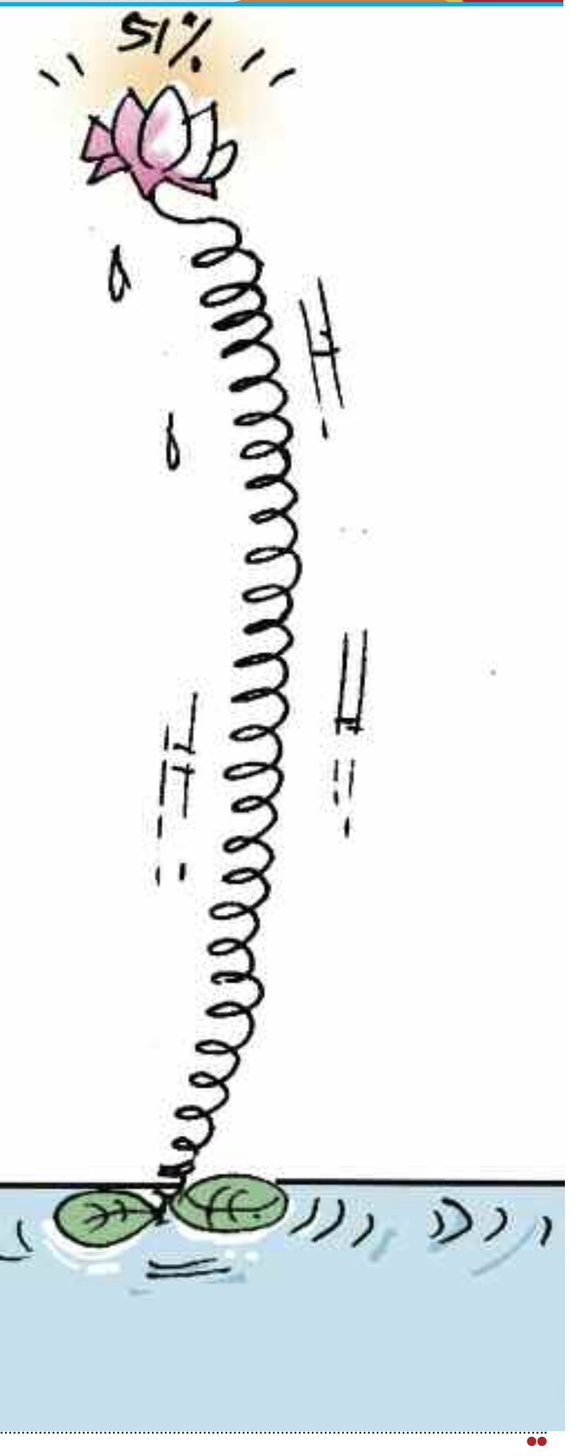

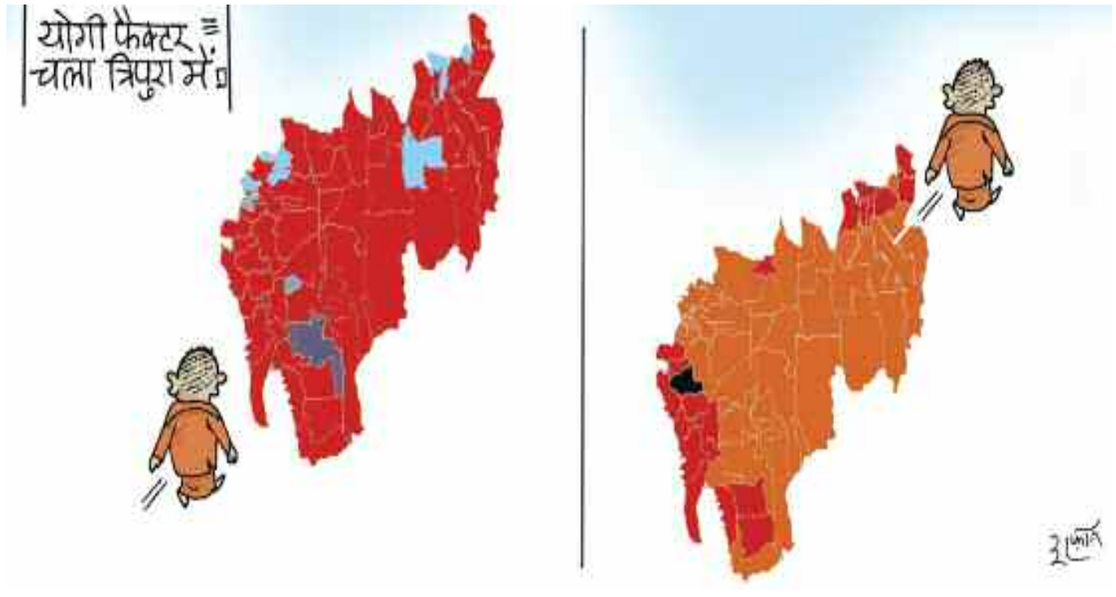

Courtesy : TOI

Courtesy : Social Media



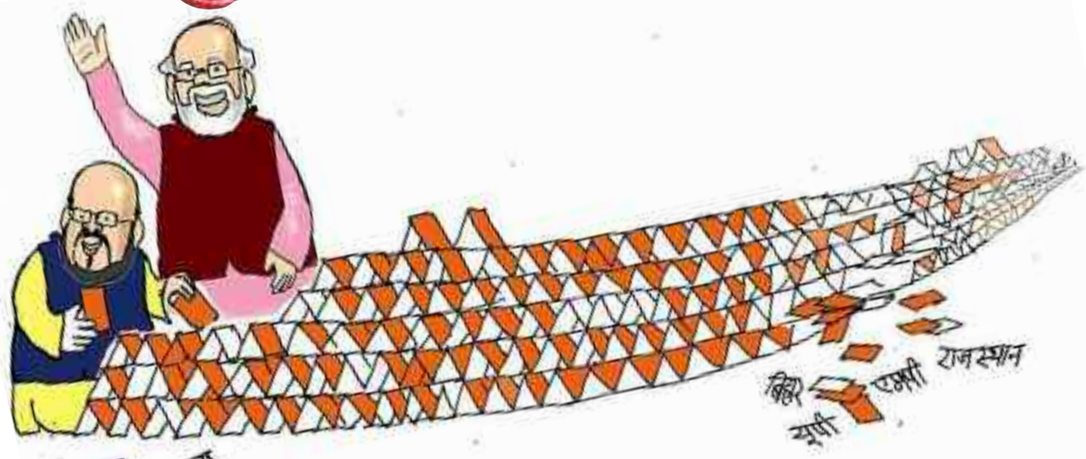


Courtesy : Satyagrah

Courtesy : Social Media

Courtesy : DB Post

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media



# घर में पिटे !!!

पूरे उत्तर-प्रदेश में ये बात मशहूर थी कि लगातार उन्नीस सालों से गोरखपुर के सांसद रहे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को उनके गृह क्षेत्र में हराना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है । इसीलिए जब गोरखपुर और उपमुख्यमंत्री केशवप्रसाद मौर्य के संसदीय क्षेत्र फूलपुर के उपचुनाव घोषित हुए तो भाजपा को लगा था कि इन दोनों उपचुनावों को जीतना बच्चों के खेल से ज्यादा नहीं होगा । लेकिन ऐन वक्त पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव और बसपा सुप्रीमो मायावती ने आपस में हाथ मिलाकर ऐसा धोबीपाट मारा कि भाजपा दोनों जगहों पर चारों खाने चित्त हो गई । एक साल पहले उत्तर-प्रदेश के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने सपा और बसपा को जैसी करारी मात दी थी,लोग कह रहे हैं कि योगी आदित्यनाथ की इस प्रतिष्ठित सीट को जीत कर इन दोनों ने अपनी हार का पूरा बदला ले लिया है।

Courtesy : TOI

Courtesy : The Hindu / Keshav

Courtesy : Patrika

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : DB Post

Courtesy : DB Post

गोद लिए गाँव एवं स्मार्ट होने रखे सिटीज की तो ये जाने लेकिन गोरखपुर, फूलपुर जैसी सीटों से जनता के ही स्मार्ट होने की खबरें जरूर आने लगी हैं!

Courtesy :Shekhargurera.com

Courtesy : Social Media

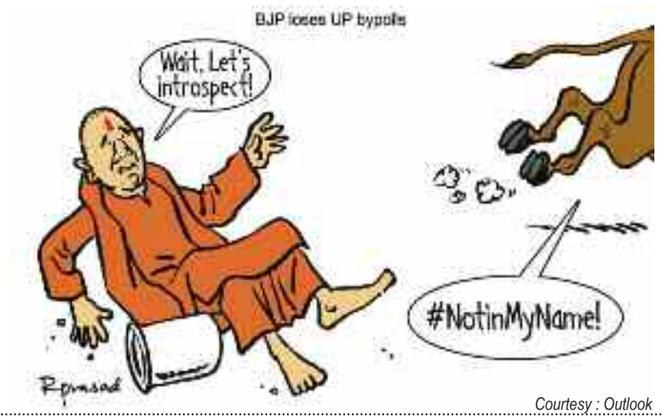


Courtesy : Outlook

Now and then, we have to listen voters' *Mann Ki Baat* too, sir!

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Social Media

Courtesy : DB Post

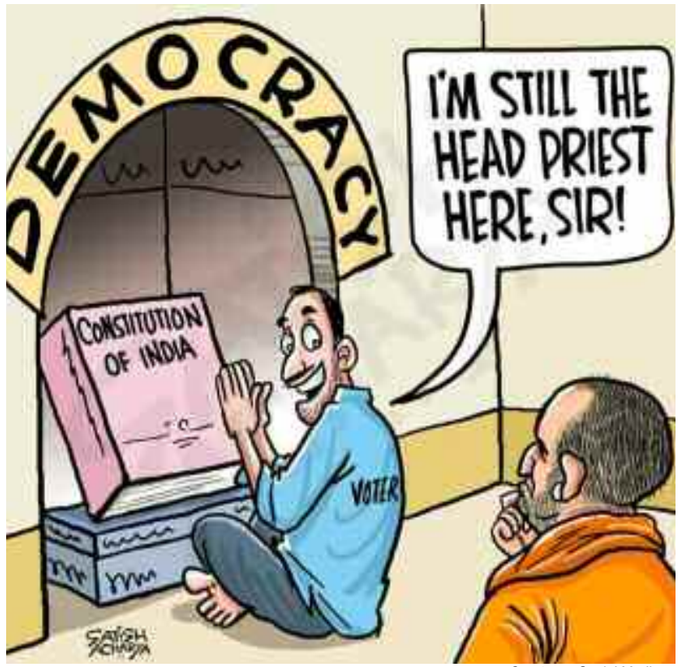


Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

# जय किसान !!!

पिछले कई सालों से सारे हिन्दुस्तान में किसानों की बदहाली और दुर्दशा को सरकारें जिस तरह नजरंदाज करती आई हैं,किसानों के हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। आये दिन किसानों के आत्महत्या की खबरें अखबारों की सुर्खियाँ बनती रही हैं । लेकिन इस बार महाराष्ट्र के किसानों ने वहां की सड़कों को अपने खून से सुर्ख कर दिया । महाराष्ट्र सरकार की किसान नीति के खिलाफ वहां के किसान इकट्ठे हो एक सौ अस्सी किलोमीटर पैदल चलकर मुंबई पहुंचे। इनमें औरतें,बूढ़े,बच्चे,जवान सब शामिल थे। उनके पैरों से बहते खून के आगे मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस को झुकना ही पड़ा। फिलहाल उनकी मांगों को पूरा करने का आश्वासन दे दिया गया है।

Courtesy : Social Media

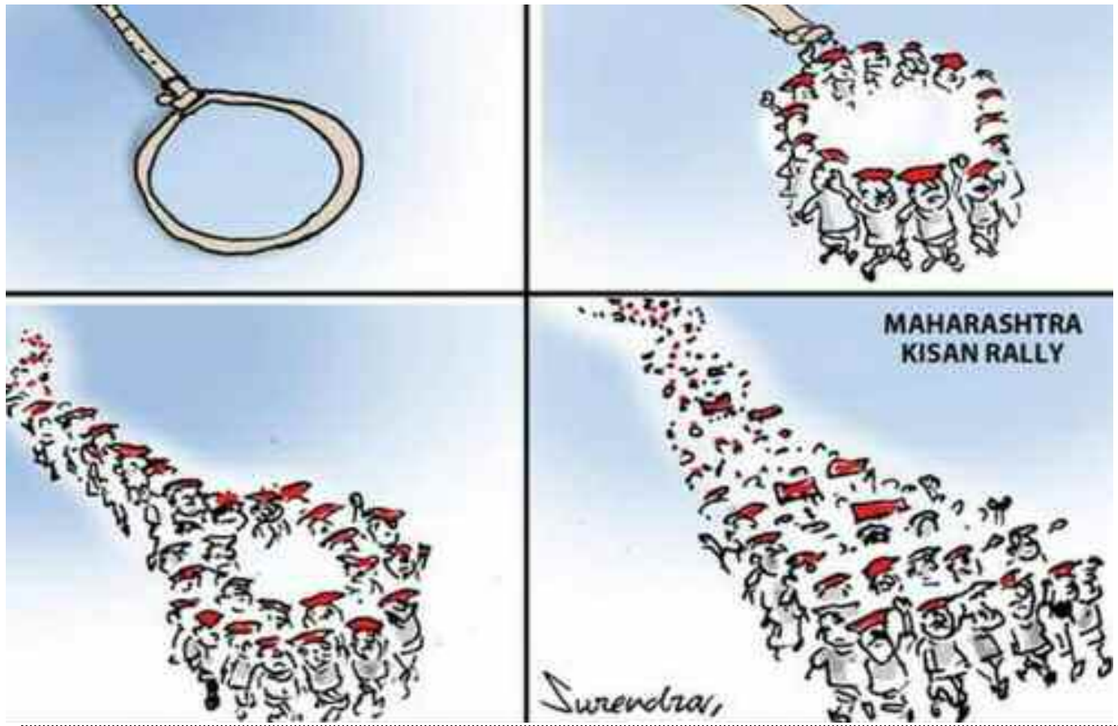


Courtesy : Surendra,The Hindu

Courtesy : DB Post

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Will you stage a small walkout to support our long march?

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : BBC,Hindi

Courtesy : Social Media

Courtesy : DB Post

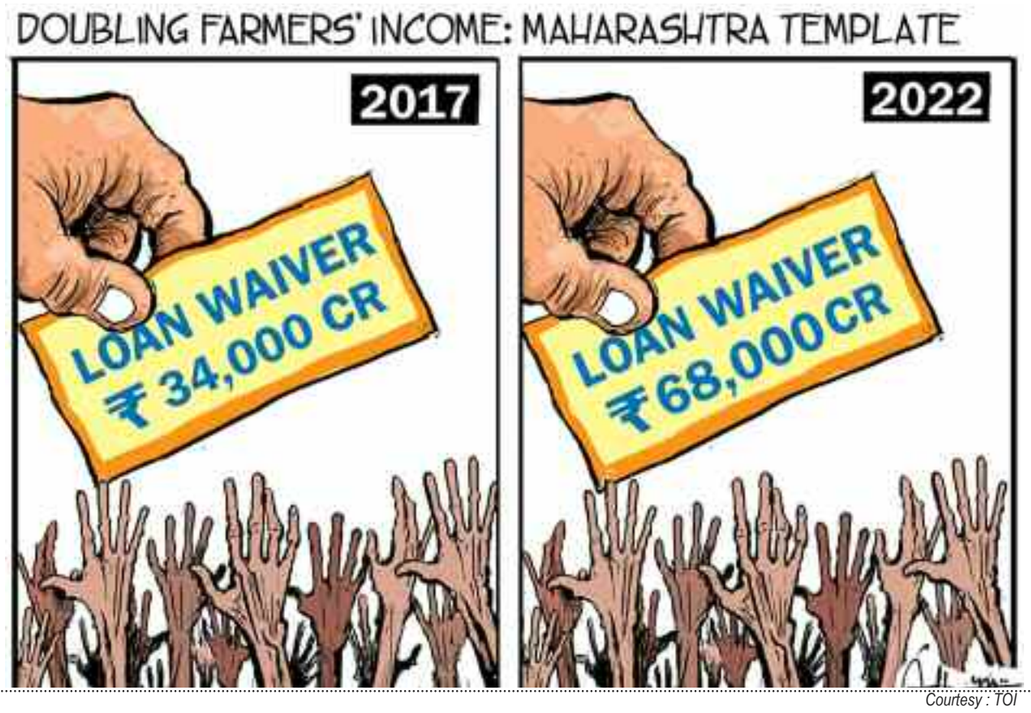


Courtesy : TOI



# फिर से अजनबी !!

पिछले लोकसभा चुनावों में नरेन्द्र मोदी की अगुआई में भाजपा ने जैसी शानदार जीत हासिल की थी उसने एनडीए के बाकी घटक दलों को बौना बना दिया। दबे स्वर में अगर किसी दल ने थोड़ा-बहुत विरोध किया भी तो उसे अनसुना किया जाता रहा । लेकिन अब जैसे-जैसे आगामी लोकसभा चुनाव का समय नजदीक आता जा रहा है,घटक दलों की बैचेनी बढ़नी शुरू हो गई है। पिछले चुनावों में किये गए वादे पूरे न कर पाने के लिए अपने राज्य की जनता को क्या जवाब देंगे इस बात ने उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया है। इसी के मद्देनजर आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रशेखर नायडू ने केंद्र सरकार से राज्य को विशेष दर्जा देने की मांग पूरी न करवा पाने की वजह से अपने आप को एनडीए से अलग कर लिया। तेलन्गाना के मुख्यमंत्री राजशेखर राव भी असन्तुष्टों और विपक्ष के साथ मिलकर तीसरा मोर्चा बनाने की धमकी दे चुके हैं। लेकिन भाजपा चुनावों में लगातार मिलती हुई जीत के चलते निश्चिन्त है।

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Satyagah

Courtesy : Surendra,The Hindu

Courtesy : TOI

Courtesy : Surendra,The Hindu

Courtesy : Surendra,The Hindu

Courtesy : Deccan Chronicle

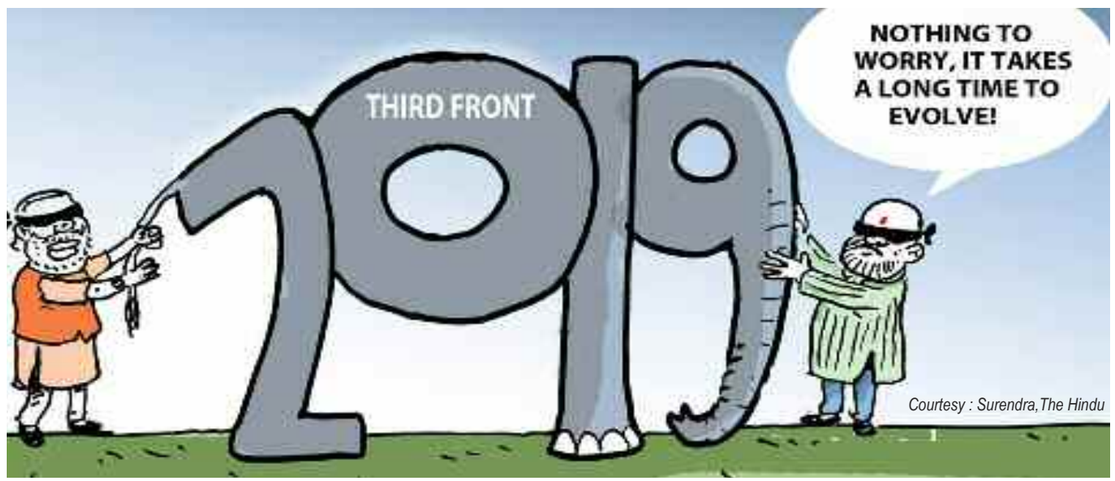


Courtesy : Surendra,The Hindu

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Deccan Chronicle



# देसी तालिबान !!!

त्रिपुरा भले ही हिन्दुस्तान के उत्तर-पूर्व का छोटा सा राज्य हो लेकिन वहां कम्युनिस्टो के अभेद्य किले में सेंध लगाना आसान नहीं था । इसीलिए इस विधानसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी के जादुई करिश्मे के चलते जब त्रिपुरा में पहली बार कमल खिला तो भाजपा कार्यकर्ताओं को समझ नहीं आ रहा था कि वो अपनी खुशी का इजहार कैसे करें । उन्हें लगा कि कम्युनिस्ट नेता लेनिन की मूर्ति तोड़ कर वो दुनिया को बता सकते हैं कि वो कितने शक्तिशाली बन चुके हैं। लेकिन उनके इस कदम से पूरे देश में मूर्तियाँ तोड़ने का जो सिलसिला शुरू हुआ उसने अफगानिस्तान के बामियान की याद ताजा कर दी।

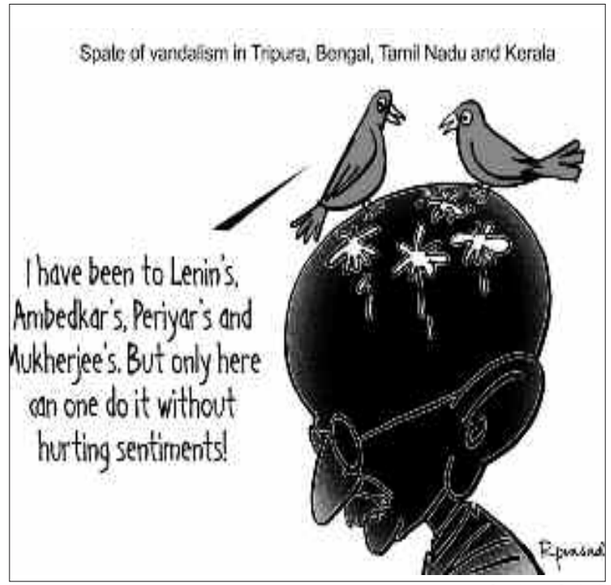


Courtesy : Outlook

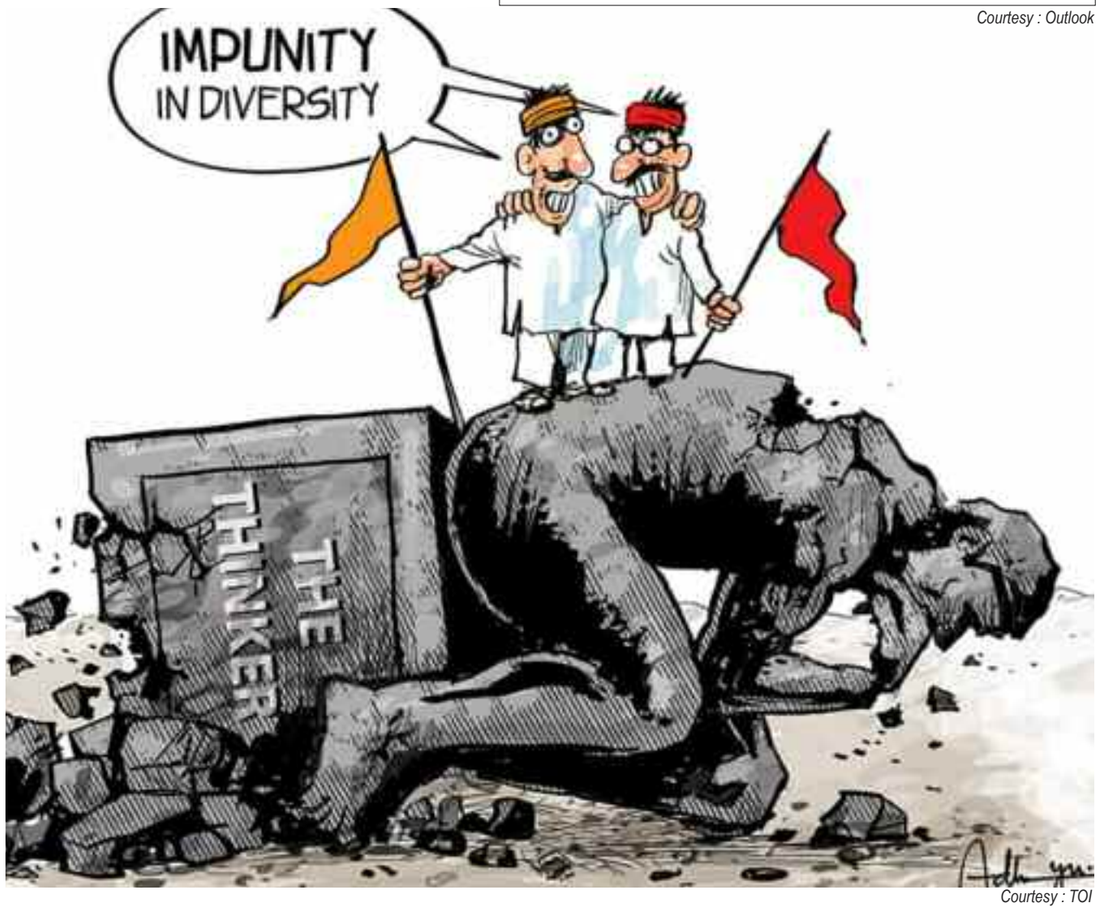


Courtesy : TOI

Courtesy : Surendra, The Hindu

Courtesy : TOI

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

This leader never had security cover in his lifetime!

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : BBC,Hindi



# मुझे मरने दो !!!

पूरी दुनिया में पिछले कई सालों से इच्छा मृत्यु को ले कर बहस छिड़ी हुई है - कोई इंसान अपनी जिन्दगी से तंग आ कर यदि मरना चाहे तो उसकी ये मांग पूरी करना कहाँ तक जायज है। हिन्दुस्तान के सुप्रीमकोर्ट ने हाल ही में इस मांग की हाँ पर अपनी मुहर लगा दी है। अब ऐसे लोग जो गंभीर बीमारियों के चलते मौत के इंतजार में अंतहीन तकलीफ से गुजरते थे शायद सुकून की मौत पा सकें। पर इसका दुरूपयोग नहीं होगा ये सवाल अभी भी बना हुआ है।

Courtesy : Patrika

Courtesy : Pawan

Courtesy : BBC,Hindi

# डाटा -बाय बाय !!!

हाल ही में जब ये खबर आई कि सोशल साईट फेसबुक से पांच करोड़ उपभोक्ताओं का डाटा लीक हो गया जिसका दुरूपयोग अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के चुनाव अभियान में किया गया था तो इस खबर ने पूरी दुनिया में सनसनी फैला दी। हिन्दुस्तानी मीडिया ने इस खबर को जम कर उछाला। लेकिन केन्द्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने भी जब फेसबुक के निर्माता जुकरबर्ग को इस हरकत के लिए धमकाया तो अब हिन्दुस्तान की जनता को शक होने लगा है कि आने वाले चुनाव में कहीं ऐसा ही कुछ उनके साथ तो नहीं होने जा रहा है?

I have no fear of data theft... all of my four FB accounts are fake!

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy :TOI

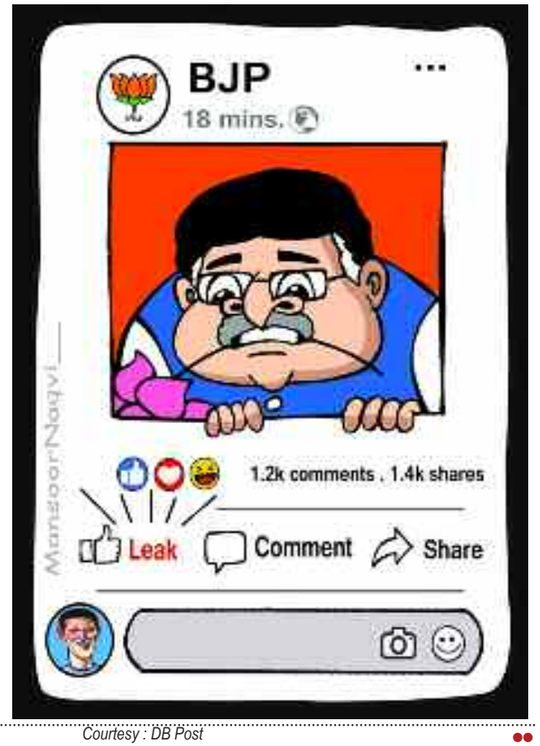


Courtesy : DB Post

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC,Hindi

# खरीदार चाहिए

संतोष त्रिवेदी

वे बिकने को तैयार थे,पर बिक नहीं सके। अपना भाव भी खोल दिया था पर कोई खरीदार नहीं मिला। पुराने खिलाड़ी हैं,खूब 'खेले' भी हैं पर नए खिलाड़ियों से मात खा गए। करोड़ों की छोड़िए, कौड़ियों के लायक भी किसी ने नहीं समझा। जिसका बाजार भाव नहीं,उसकी प्रतिभा दो कौड़ी की। ऊँची कीमत पर बिकने के लिए खेल भी ऊँचा होना चाहिए। पहले घोड़ों पर ऊँचे दाँव लगते थे,अब खिलाड़ियों पर लगते हैं। बोली ही बता देती है



कौन घोड़ा है,कौन खच्चर ! बाजार इसकी पहचान अपने तरीके से करता है। वे इसी बेरहम बाजार में नीलाम होना चाहते थे पर चूक गए। बाजार की भाषा में वे अपने खेल में अब चुक गए हैं। उन्हें इसी बात का दुःख है। भाव मिलता तो कैरियर 'गली' से निकलकर सीधे हाईवे पर आ जाता। पर होनी को कौन टालता ! बीते जमाने में 'बिकना'शर्म और जलालत का विषय होता था। अब गौरव और उपलब्धि का विषय है। न बिक पाना सबसे बड़ी जिल्लत है। प्रतिभा की परख इतनी आसान कभी नहीं रही। जिसका ऊँचा दाम,उसका बाजार। गुलाम एक बार कायदे से बिक जाते तो आगे फायदे ही फायदे। विज्ञापन के बाजार में हर रोज बिकते। इस तरह ग्राहकों के 'बिक' जाने की वजह बनते। पर उनके ऐसे नसीब कहाँ ! मंडी सजी,बिकने का बिल्ला भी लटका पर उन पर खरीदने वाली कोई नजर न टिक सकी। इस तरह वे भी बाजार में नहीं टिक सके। बाहर हो गए। 'अनबिका' रह जाना उनके कैरियर की सबसे बड़ी असफलता है। इस बिकाऊ समय में 'अनबिके' रहने का दर्द उनसे ज्यादा और किसे होगा ? घर-परिवार वालों को बिन-बिका मुँह दिखाएँगे तो लज्जा नहीं आएगी ? वे तो उजला करने वाली क्रीम चुपड़कर बैठे थे,फिर भी खरीदारों को गच्चा नहीं दे पाए। उन्हें पता नहीं कि गच्चा देने का काम बाजार का है। आज बाजार से बाहर हुए हैं,कल 'खेल' से भी बाहर होंगे। जो खुद को ठीक से बेच भी न सके,वह कुछ भी हो सकता है,अच्छा 'खिलाड़ी' नहीं।

और इधर देखिए। क्या खूब बिके हैं ! बिकने में भी रिकॉर्ड कायम किया है। इन पर सबसे बड़ी बोली लगी है। नीलामी का टैग सरे-बाजार उछला। फिर भी घर-परिवार में उत्सव का आलम है। बिकने की मेरिट-लिस्ट छापी जा रही है। क्या 'स्कोर' बनाया है बंदे ने ! मंडी में टॉप किया है। सरोकारी पत्रकार उससे इंटरव्यू लेने को उतावले हैं। चड्डी-बनियान से लेकर मच्छमार अगरबत्ती निर्माता तक उसके दरवाजे पर लाइन लगाकर खड़े हैं। एक 'बिका हुआ' आदमी क्या-क्या न हीं बेच सकता ! सम्भावनाएँ तलाशी जा रही हैं। प्रायोजक ढूँढ़े नहीं छाँटे जा रहे हैं। उसकी प्रोफाइल मोटी हो गई है। बाजार खुलकर खेलता है ताकि खिलाड़ी भी खुलकर 'खेल' सके। उसका संदेश साफ है कि नई पीढ़ी नैतिकता और सदाचार के कुपाठ अब बंद करे। इसीलिए जो 'खेल' पहले बंद कमरों में होते थे,अब डीटीएच के जरिए सीधे प्रसारण का सुख पाते हैं। जनता का क्या है,जैसे 'आधार' से जुड़ी है,बाजार से भी जुड़ जाती है।

हम अभी बाजार के हिसाब-किताब में पड़े थे कि सामने से 'वे' आते हुए दिखाई दिए। हम ऐसे मौकों को भुनाने के समय खासे संवेदनशील हो जाते हैं। हमें बाजार में बने रहने के लिए यह बेहद जरूरी है। उनकी भावनाएँ आहत हुई थीं और उसमें हम अपनी संभावनाएँ देख रहे थे। सहानुभूति जताने के बाद उनसे पहला सवाल यही पूछा-'बिकने में क्या कमी रह गई थी ? मैदान में तो तुम्हारा 'पेस' भी ठीक-ठाक है !' वे भावुक हो गए। कहने लगे-यह आप और हम समझते हैं। मैं 'मीडियम पेसर' हूँ। उन्हें ऐसा खिलाड़ी चाहिए था,जो चकमा दे सके। एक ही बॉल को यार्कर और गुगली में तब्दील कर सके। बल्लेबाजी करे तो बॉल को बल्ले में लगने से पहले सीमा रेखा का पता मालूम हो। फील्डिंग करूँ तो बॉल हमारे सर के ऊपर से न निकल पाए। अब उन्हें कोई कैसे समझाए कि मैदान में 'नो फ्लाइट जोन' नहीं हो सकता। दरअसल,उन्हें खिलाड़ी नहीं 'करामाती जिन्न' चाहिए। हम यहीं पर मात खा गए।'

# THE 'WAR'TOONIST

## The cartoonist who depicted the other side of World War II

**Poorva Jain**

He was a cartoonist who held both the sword and the pen at the same time, and did a mighty good job too. William Henry 'Bill' Mauldin was one of America's most famous cartoonists, and the top name when it comes to war
cartoonists. Yes, there are war cartoonists in our world too, who bring you both suffering and humour right from the battlefield.

Though he made other cartoons as well, but Mauldin's best work was on World War II, which won him the first of his two Pulitzer Prizes. His two characters, Willie and Joe, were mud-covered, dry-humoured soldiers who showed the battlefield from the other side of the table. Both of them were seen stoically enduring the difficulties and dangers of duty in the field.His cartoons were popular with soldiers throughout Europe, and with civilians in the United States as well.

His family had a tradition of military service. Both his father and his grandfather had been soldiers and had fought WW I and Apache Wars, respectively. When

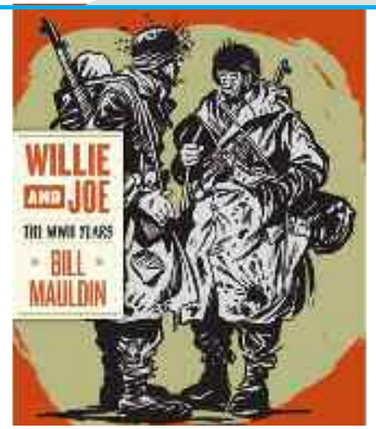

Mauldin grew up, he took courses at the Chicago Academy of Fine Arts. Later, he went where his forefathers had been going... to the military.

At the age of 18, Mauldin joined the Arizona National Guard in 1940. He was in active duty as a rifleman in the 45th Infantry Division. While serving the 45th, he volunteered to work for the unit's newspaper, drawing cartoons about regular soldiers. It was there that he created Willie and Joe, who accompanied him throughout his cartooning years during the war. He went with the 45th through the Army camps in the United States, and in 1943, as a sergeant, went overseas with the division to Sicily.

It was here in Italy that he switched from his unit's paper, the 45th Division News, to the Stars and Stripes, with an assignment to cover the World War II in cartoons.

The editor of Stars and Stripes, Egbert White, encouraged Mauldin to syndicate his cartoons and also helped him find an agent. By March 1944, he received his own jeep, in which he roamed the front, collecting material. He published six cartoons a week.

But all wasn't as easy as we have written here so far. Mauldin's cartoons offended some officers in the forces. One of his cartoons ridiculed a decree that all soldiers be clean-shaven at all times, even in combat. This did not go down too well with the officer who issued the decree, and he threatened to throw Mauldin in jail and ban the newspaper. Thankfully, the officer's superior intervened and asked him to leave Mauldin alone. He felt that the cartoons gave the soldiers an outlet for their frustrations, and even called Stars and Stripes the 'soldier's paper'.

His cartoons made Mauldin a hero for the common soldier. Many of them often credited him with helping them get through the rigours of the war. This credibility and love increased when Mauldin was wounded in the shoulder by a German mortar while visiting a machine gun crew in 1943. By the end of the war, he received the Army's Legion of Merit for his cartoons.

At the young of 23, Mauldin won his first Pulitzer Prize in 1945 for his wartime body of work. The same year, the first civilian compilation of his work Up Front was published. It was a collection of Mauldin's WW II cartoons, and topped the seller list that year.

Post the war, Time Magazine published Mauldin's character Willie on its cover page for the June 1945 issue. In 1961, Mauldin himself made it to the Time cover.

Mauldin wanted to kill Joe and Willie in combat on the last day of the war, but his paper's editor didn't let him do

MAULDIN'S FAMOUS CARTOON AFTER KENNEDY'S ASSASSINATION

THE CARTOON THAT WON MAULDIN HIS FIRST PULITZER PRIZE

BILL MAULDIN ON THE COVER ON TIME MAGAZINE IN 1961

that. After the war, Mauldin took both his characters into civilian life, but that was an unsuccessful attempt. He also started drawing political cartoons expressing a generally civil libertarian view, but those were not well received by editors. They wanted him to make apolitical cartoons.

In 1956, the soldier-cartoonist ran for the United States Congress as a Democrat, but failed. However, the soldier in him never did, and he continued to fight as a cartoonist.

Three years later, he won a second Pulitzer Prize while working at the St Louis Post Dispatch. His cartoon depicted Soviet author Boris Pasternak in a forced labour camp, asking another prisoner, 'I won the Nobel Prize for literature. What was your crime?' Pasternak had won the Nobel Prize for his novel Doctor Zhivago, but was not allowed to travel to Sweden to accept it.

The following year, Mauldin won the National Cartoonist

Society Award for Editorial Cartooning. In 1961, he received their Reuben Award as well.

Mauldin also worked as a freelance writer in addition to cartooning. He went on to illustrate many articles for well-known publications. In 1985, he won the Walter Cronkite Award for Excellence in Journalism, and six years later, was inducted into the St. Louis Walk of Fame. Later, Sergeant Major of the Army Jack L. Tilleypromoted Mauldin to the honorary rank of first sergeant.

By 2002, Mauldin had nearly forgotten the world due to advanced

Alzheimer's Disease. However, the world remembered him. Jay Gruenfeld, another World War II veteran, located Mauldin in his California nursing home and began a campaign to get other veterans to share their memories with the creator of Willie and Joe. Over 10,000 veterans responded, sending letters and personal effects. As a result of Gruenfeld's campaign, a whole new generation of readers was introduced to the work of Bill Mauldin.

Though Mauldin won hearts during the second World War, this 'War'toonist lost the battle with Alzheimer's in 2003. He died on 22 January that year.

# शादी • कॉम

कभी कभी मैं सोचती हूँ शादी करके भी कौन सा किला फतह कर लेता। कम से कम अभी आजादी तो नहीं छिनी हैं बेचारे की। अपने मन का राजा हैं अभी करोड़ों बे-सर पैर के सवालों से बचा हुआ है। पर माँ तो जैसे मंदिर से लेकर मस्जिद तक के इतने चक्कर काट चुकी हैं कि अब सपने में भी वो जगह जगह उन्हीं जगहों पर लड़की ढूँढती रहती हैं।

डॉ. मंजरी शुक्ला

क्या बताऊ मेरे भाई की शादी के किस्से, मन में तो दुख ही दुख हैं पर घटनाएँ हैं कि उदास रहने ही नहीं देती। पर सबसे बड़ी मुसीबत तो यह हैं कि मैं किसी के सामने दिल खोलकर हँस भी नहीं सकती वरना लोग समझेंगे कि मैं खुश नहीं हूँ उसकी शादी होने से, और सबसे ज्यादा आश्चर्य तो मुझे तब होता हैं जब लोग मुझसे मजाक-मजाक में ही अपने काले दिल की सफेद बात कह देते हैं कई बार मुस्कुरा कर और कई बार चेहरे को जरूरत से भी ज्यादा गमगीन बनाकर.... मानों मेरी ही बरसी में आकर मुझे ही सान्त्वना दे रहे हो वहाँ, तो मैं बता रही थी कि वे लोग कहते क्या हैं.. वे बेचारे चिंतनशील पुरुष और महिलाएं मुझसे सीधे मेरे मुहँ पर बिना किसी लाग लपेट के कह देते हैं -'' कहीं तुम्हीं तो अड़ंगा नहीं डाल रही हो अपने इकलौते भाई की शादी में..हेहेहे..क्योंकि अभी तो जो कुछ मिलता हैं तुम्हें ही मिलता हैं। '' और ये सुनने के बाद मेरा मन होता हैं कि मैं उन से पूछूँ '' तुम्हारे पुरखें अगर तुम्हें थोड़े से संस्कार दे देते तो तुम ऐसे बे-सिर पैर के सवाल पूछने से पहले कहीं डूब मरते। जब किसी ने पहली बार ये पूछा था तो मेरी रोते - रोते घिग्घी बंध गई थी। सूजी आँखें देखकर माँ ने भी बहुत पूछा पर वो शब्द मेरी जुबान पर ही नहीं आ रहे थे। पर धीरे धीरे ये सवाल मेहमान से कब मेरे घर का सदस्य बन गया मैं जान ही नहीं पाई। जिन्हें शायद वर्तमान राष्ट्रपति का नाम भी नहीं पता, उन्हें भी यह बात पता हैं कि मेरा 36 साल का भाई कुँवारा हैं। कभी कभी मैं सोचती हूँ शादी करके भी कौन सा किला फतह कर लेता। कम से कम अभी आजादी तो नहीं छिनी हैं बेचारे की। अपने मन का राजा हैं अभी करोड़ों बे-सर पैर के सवालों से बचा हुआ है। पर माँ तो जैसे मंदिर से लेकर मस्जिद तक के इतने चक्कर काट चुकी हैं कि अब सपने में भी वो जगह जगह उन्हीं जगहों पर लड़की ढूँढती रहती हैं। किसी दिन एक पंडित ने बता दिया कि चालीस दिन तक जाकर शिवलिंग के ऊपर अगर लड़का जल चढ़ाएगा तो इस संसार तो क्या पूरे ब्रह्माण्ड में कोई भी उसका ब्याह इक्तालिसवे दिन रोक नहीं सकता, दुल्हन खुद अगर बैंड बाजा लेकर ना आ जाए तो हमारा नाम जो की ''महावीर पाण्डेय'' हैं बदल देना। पतले दुबले मरियल से पंडित की ऐसी ओजस्वी वाणी ने मेरी माँ को भावविभोर कर दिया और उन्होंने तुरंत सरपर पल्लू डालकर उनके ना जाने कितनी बार पैर छू लिए। जबकि दुनियाँ जानती हैं कि उनकी पत्नी पड़ोसी के साथ भाग

गई और आज तक घर तो क्या उनके मोहल्ले में भी कदम नहीं रखा। पर माँ के सामने ये बोलकर बीच सड़क में कौन गाली खाए इसलिए मैं मन ही मन में सवाल जवाब करती रही। माँ का तो ये हाल हैं कि सड़क के लड़के जब मुझे प्रशंसा भरी नजरों से देखते हैं तब भी मुझे सरे आम चांटा मारने में जरा भी संकोच नहीं करती। चटाक से चांटा मार देती हैं उन सभी लफंगों के भी सामने, बेचारे वो सभी दुबारा कभी पलटकर देखने की हिम्मत भीनहीं करते। अपनी सारी सहेलियों में ही एक बदनसीब हूँ जिसे अब सारे मोहल्ले तो क्या पूरे शहर के लड़को ने अपनी दीदी बना रखा हैं। जब भी मुझे कोई दीदी बोलता है तो मेरे दिमाग में पुराने जमाने कि ब्लेक एंड व्हाईट फिल्में चलने लगती हैं, जिसमे बेचारी एक बहन जरूर होती थी जिसका काम सारी फिल्म में अपनी विधवा माँ और पढ़े लिखे भाई की नौकरी के लिए प्रार्थना करना होता था। खैर जब माँ के बहुत कहने पर भी चिंटू नहीं माना तो माँ ही जाकर शिवलिंग के ऊपर जल चढ़ाती और कहती -'' प्रभु ,ये जल मैं नहीं बल्कि मेरा बेटा चिंटू तुम्हें अर्पण कर रहा हैं।'' और मंदिर में खड़े सभी लोग माँ के इस भोलेपन पर मुस्कुरा कर रह जाते। पर जैसे ही बीस दिन हुए अचानक

पंडित जी मंदिर में ताला मारकरअपने गाँव को बढ़ लिए बाद में पता चला कि उनकी भैस के बच्चा हुआ था । इधर माँ बेचारी घर से दो किलोमीटर दूर दूसरे मंदिर अँधेरे में मेरी वाली नीली चप्पल , जो कि इन्हीं मौकों के लिए अनिवार्य थी,पहने हुए गिरती पड़ती बड़बड़ाती हुई चली जा रही थी - भैसिया के बच्चा हुआ जा रहा हैं और ये इतना बड़ा सांड बिन ब्याहे हमारी छाती पर मूंग दल रहा हैं। पता चला कि जिस दूर वाले मंदिर में जाना शुरू किया वहाँ पच्चीस दिन बाद बाढ़ आ गई और शिवलिंग नर्मदा जल में जलमग्न हो गया । मेरी माँ ये द्रश्य देखकर जोर जोर से रोने लगी और मंदिर तक जाने कि जिद करने लगी । जब लोगो के पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें जल चढ़ाना हैं तो सब हँसते हुए बोले,अरे, उन पर जल क्या चढ़ाना, उन्हें तो समझो अब चार पाँच दिन अब जल के अन्दर ही रहना हैं । माँ गुस्से में लोटा वही फेंककर फिर से गिरती पड़ती प्रशासन को कोसते हुए चली आई मानों जैसे उन सबने ही कहीं से बाढ़ को लाकर मंदिर डुबो दिया हो। पर माँ के उत्साह और भक्ति में तनिक भी कमी ना आई सोह जैसे ही कहीं भी कुँवारी कन्या का पता चलता फटाक से हम अपनी हल्की नीली घिसी हुई चप्पल पहनकर, खटाक से उसके घर की ओर निकल जाते कि कहीं हमसे पहले किसी और घर का कुँवारा वहाँ ना पहुँच जाए और मेरे बेचारे भाई के अरमानों पर एक बार फिर टेंकरों पानी फिर जाए । खैर जहाँ भी हम जाते तो मेरी माँ को लड़की तुरंत पसंद आ जाती चाहे वो घूँघट में हो या बिना घूँघट के ..वो बेचारी इस उम्र में चिंटू के पीछे दौड़ते हुए थक जाती थी और इसलिए वो बस घरमें एक बहू लाना चाहती थी। जब सब करीब -करीब तय हो जाता तो मेरे भाई के वीर जगते और वो कहता अब तो मैं भी जाकर मिलूँगा इस लड़की से... फिर धीरे से अपनी हँसी दबाकर कहता मतलब औरत से..और उससे पूछूंगा कि बता तेरी शादी अभी तक क्यों नहीं हुई । फिर अपनी बड़ी बड़ी आँखें नचाता हुआ कहता ..फिर में पूछूंगा-'' पहले कही भाग-वाग तो नहीं गई थी ।''

इस पर माँ तो जैसे चंडी का रूप धारण कर लेती और हाथ में जो भी सामान हो वो उसकी तरफ फेंककर कहती -'' अरे ,नामुराद, तू क्यों नहीं भाग गया किसी के साथ..कम से कम दिन रात इस बुढापे में सेरभर रोटियाँ बनाने से तो फुर्सत मिलती मुझे ।'' और चिंटू इस बात पर हँसता-हँसता दोहरा हो जाता और लाल मुँह करके कहता -'' अरे माँ...भागेंगे तो हम सब साथ में भागेंगे , क्योंकि अगर वो मुझसे लड़ी तो मैं तुम्हे यानी झाँसी की रानी को आगे कर दूँगा । और माँ भी थोड़ी ही देर में फिर मुस्कुराकर मान जाती और हम लोग अपनी अपनी जगह पर वैवाहिक विज्ञापन के पन्ने अखबार से निकालकर निर्विकार रूप से किसी कोर्स की बुक की तरह ध्यान से पढ़ने बैठ जाते । आखिर नाते रिश्तेदारों और दोस्तों की मदद से एक सुकन्या जो कि अधेड़ावस्था की तरफ तीव्रगति से प्रस्थान कर रही थी, के बारे में पता चला। बस फिर क्या था सूटकेस तो सदा हम सबका तैयार ही रहता था सो तुरंत चल पड़े -'' किस्मत ऐसी कि उस दिन शहर में दंगे हो गए और आवागमन के सारे साधन बंद हो गए । चिंटू हमेशा की तरह नुक्स निकालता हुआ बोला -'' आंए , मेनू तो लगता हैं ये लड़की बड़ी मनहूस है। इसको देखने आये और कर्फ्यू लग गया ।''

मम्मी कुढ़कर बोली- '' अभागे, तेरे कदम स्टेशन पर धरते ही लगा है ये कर्फ्यू वर्फ्यू ।''

चिंटू धीरे से बोला -'' दंगे भड़काने के लिए ही लगता हैं आई हो यहाँ '' और फिर खुद ही मुस्कुरा कर सीटी बजाने लगा। आखिर हम लोगो ने बड़ी मुश्किल से एक टैक्सी वाले को तैयार किया जिसने हमसे तिगुने पैसे लिए । खैर पैदल तो जा नहीं सकते थे तो मन ही मन कुढ़ते हुए किसी युद्धभूमि में पराजित हुए सिपाही की तरह निढाल से जाकर टैक्सी में बैठ गए । सच बताऊँ , इतनी इज्जत तो मेरी पहले कभी नहीं हुई थी जितनी लड़की वालों ने की। हमारे पहुँचते ही चाय के साथ ढेर सारे पकवान मेज पर फटाफट बिछ गए जिन पर मैं और सनी टूट पड़े । माँ बेचारी थी तो भूखी। पर हम दोनों को भूखे भेड़ियों की तरह खाते देखकर सिर्फ पानी ही पीती रही। जब माँ का बात करते करते मुँह थक गया तो उन्होंने वहाँ रखा अखबार उठा लिया और उसमे अपने आपको पूरी तरह से डुबो दिया । थोड़ी देर बाद लड़की आई जो की माँ और मुझे हमेशा की तरह पसंदआ गई। चिंटू की तरफ देखा तो उसने भी मौन स्वीकृति दे दी जिसे देखकर मम्मी ने अखबार एक ओर जोर से पटका और अपनी भावी बहू की तरफ ऐसे दौड़ पड़ी जैसे आदमी आग लगने पर घर से बाहर की ओर दौड़ता हैं । आव देखा ना ताव , झट से अपनी अंगूठी उतारकर उसकी नाजुक सी ऊँगली में पहनाते हुए उसे हजार का नोट पकड़ा दिया।

सब गदगद हो उठे मुझे भी तसल्ली हुई कि चलो टैक्सी वालो को तिगुना किराया देना भारी नहीं पड़ा। खैर हम लोग शादी की बात पक्की करके जैसे हीऑटो में बैठने लगे तो लड़की की माँ बोली-'' बेटा, अपनी होने वाली सासू माँ से डर मत, जरा उन्हें देख के मुस्कुरा तो दे ।''

ये सुनकर लड़की हँस दी और हम भी मुस्कुरा दिए । आधे रास्ते जाने के बाद चिंटू गंभीर स्वर में बोला-'' लड़की के दाँत खरगोश की तरह बड़े हैं, अच्छा हुआ हँस दी तो देख लिए ।''

मम्मी कुढ़कर बोली-'' तो तुझे कौन सी जमीन से गाजर खुदवानी हैं ।'

ये सुनकर टैक्सी वाला जोरो से हँसा और मम्मी और मैं अपनी अंगूठी और हजार रुपयों के लिए सोचने लगे ।

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy :Patrika

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

# CONGRATS Subhani

Senior cartoonist Subhani was honoured with the Best Cartoonist Award by Nava Telangana at their third anniversary at Sundarayya VignanaKendram, Hyderabad, on 21st March 2018. TeekhiMirch heartily congratulates him! SubhaniShaik has been the editorial cartoonist with Deccan Chronicle, Secunderabad. For 20 years, his daily cartoon corner 'Counterpoint' has been the staple dose of humour, both serious and simple, for over two million readers of Deccan Chronicle. DC is the largest circulated daily from South India,



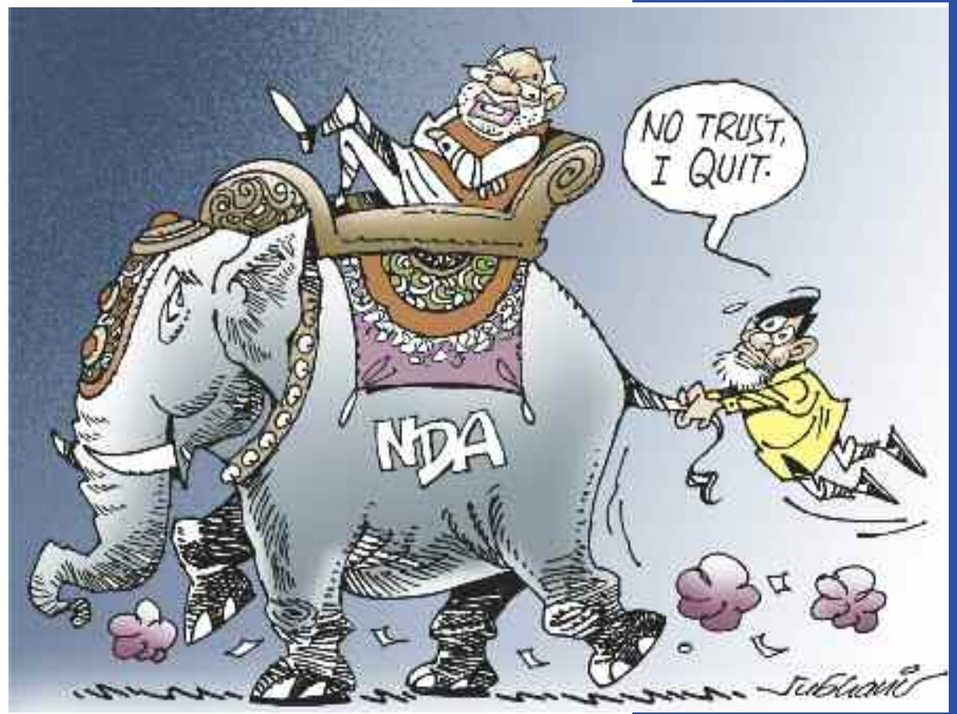

# COUNTER POINT

**Does Japan have any technology for making bullet boats?**

**The number of states where our parties are in power!**

published simultaneously from eight centres in Andhra Pradesh, Chennai in Tamil Nadu and Bengaluru in Karnataka. His cartoons also appear in The Asian Age daily from New Delhi and Mumbai. Earlier, he worked as an illustrator and cartoonist for Andhra Bhoomi weekly from 1985 to 1988 and in Andhra Bhoomi daily from 1988 to 1990. He has to his credit two books entitled 'The drive' and 'Point - Counterpoint'.

Courtesy : Social Media

Courtesy : Social Media

Courtesy : BBC Hindi

**Sorry, sir. We are busy with tour packages for political parties and leaders!**

Courtesy : Deccan Chronicle

Courtesy : Social Media

# TEEKHI MIRCH

INDIA'S FIRST NATIONAL MONTHLY BILINGUAL CARTOON MAGAZINE

## SUBSCRIPTION FORM

YES, I WOULD LIKE TO SUBSCRIBE TO TEEKHI MIRCH FOR:

- ☐ 1 YEAR - 12 ISSUES (Rs 2 50)
- ☐ 2 YEARS - 24 ISSUES (Rs 500)

YOUR DETAILS:

NAME: _____

GENDER: ☐ MALE ☐ FEMALE

MOB: _____

ADDRESS: _____

_____

EMAIL: _____

PAYMENT DETAILS:

(All cheques/drafts must be made payable to **TEEKHI MIRCH**)

CHEQUE NUMBER _____

DRAFT NUMBER: _____

**For online payment-**

Make Payment in favourof **TeekhiMirch**

Bank account no-**90901010007947**

IFSC code-**SYNB0009090**

Bank-**Syndicate Bank,MayurVihar branch ,Delhi-91**

TERMS AND CONDITIONS:

1. Subscriptions are not refundable
2. All payments must be made in Indian Rupee (Rs). Please do not send cash for payment.
3. 104, Hibiscus, Paramount floraville, Sector-13, Noida express way, Noida (U.P.)

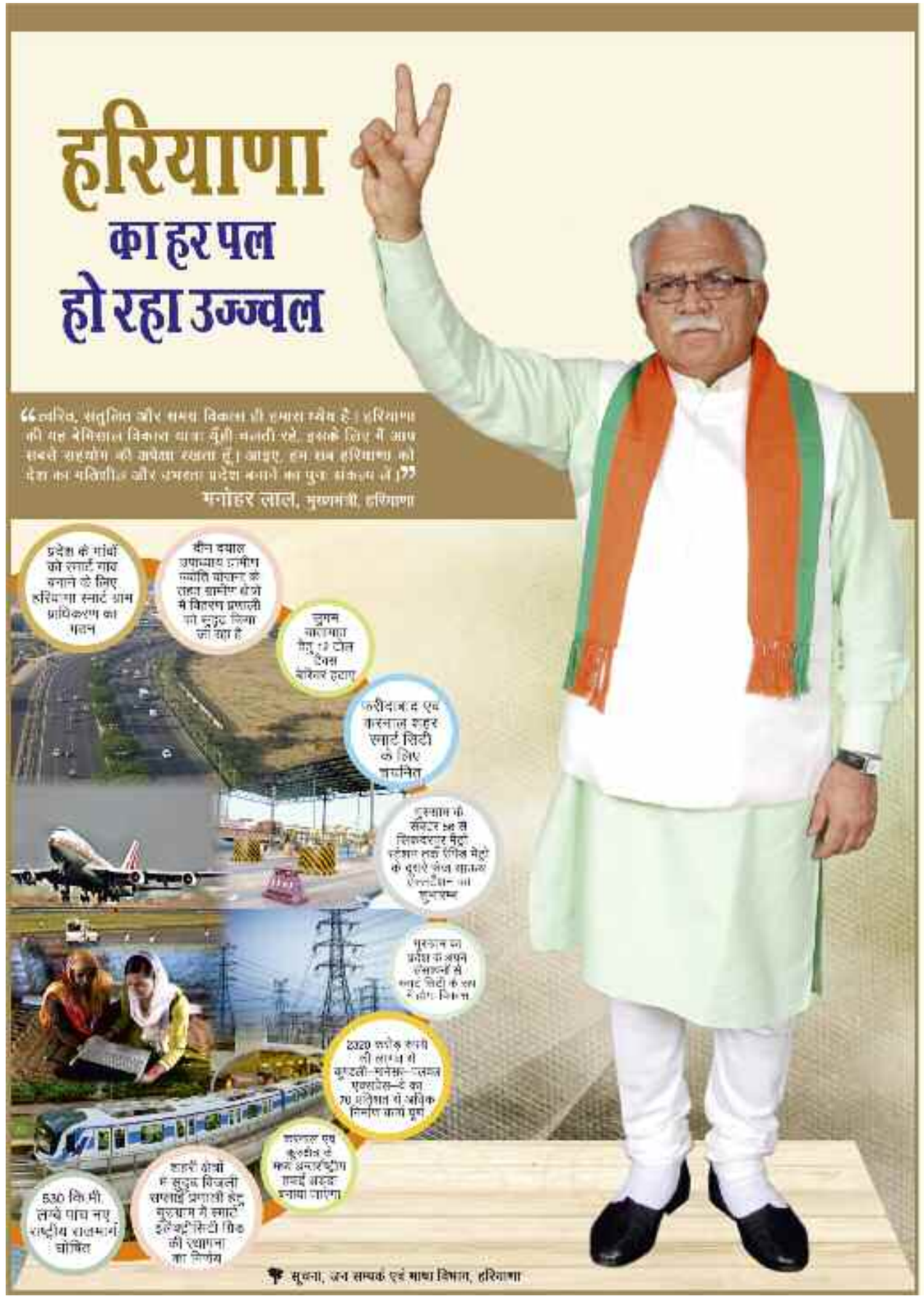

RNI No-DELBIL/2014/56498
BOOK POST LIC NO.-DL(E)-20/5492/2016-18
9th & 10th of every month